देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८६/२

Impact Factor
8.642

ISSN : 2395-7115
Sept. 2025
Vol.-22, Issue-3(2)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

21वीं सदी का साहित्य : नव विमर्श

Special Issue Editor :
Dr. Poornima S.

Special Issue Co-Editor :
Dr. Anuradha P
Ms. V. Amudha

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

53.	मिट्टी से बना अन्न	डॉ. टी. अरुणा कुमारी	285-289
54.	हसीनाबाद उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. अर्चना शर्मा	290-293
55.	भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाने में कानूनी अधिकारों की भूमिका	विवेचना पाण्डेय, डॉ. सरिता भवानी मालवीय	294-300
56.	**Therigatha : Legacy and Relevance in 21st Century Indian Literature**	**Indresh Prasad Purohit**	**301-310**
57.	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट की कविताओं में यथार्थ विमर्श	डॉ. लता एस. पाटिल	311-315
58.	**Entrepreneurial Self-Efficacy and Entrepreneurial Intentions of Tribal Women: A case Study of Chhattisgarh, India.**	**Dimpal Agrawal**	**316-328**
59.	**The Anatomy of Indifference : Literature as an Antidote to Modern Insensitivity**	**Dr. S. Farhana Zabeen, Dr. I. Jane Austen**	**329-334**
60.	**Quest for Self-Identity and Independence of Women in Preeti Shenoy's The Secret Wishlist**	**Dr. R. Abeetha, Dr.A. Jayashree Prabhakar**	**335-345**
61.	**Feminine Isolation and Resistance through Nature in Anita Desai's *Fire on the Mountain***	**Ms.Greeshma N.P, Dr. I. Jane Austen**	**346-351**
62.	बैंकिंग क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमता के अनुप्रयोग की संभावनाएं और चुनौतियां	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, श्री एच पंढरीनाथ	352-355
63.	मॉरिशस के समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरन्धर के सृजनात्मक विचारों का अध्ययन	वी. अमुधा, डॉ. अनुराधा पाकलापाटि	356-360
64.	डॉ. विद्या बिंदु सिंह के कथा-साहित्य में बदलते सामाजिक सरोकार	जे. अशोक कुमार जैन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	361-365
65.	मंजरी : किन्नर विमर्श	डी श्रीदेवी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	366-369
66.	सामाजिक माध्यम और इंटरनेट पर रचनात्मकता : नए माध्यम एवं नई भाषा (बाल साहित्य के संदर्भ में)	गुरू गोविंद विश्वत, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	370-375
67.	वृद्धों के प्रति संवेदनहीन होती मनुष्यता	बी. कमला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	376-381
68.	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कथा साहित्य में बदलता हुआ सामाजिक यथार्थ	डॉ. अनुराधा पी.	382-386
69.	कृष्नचंदर कृत 'जामुन का पेड़' कहानी में प्रशासनिक विमर्श	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	387-392

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Sept. 2025 Page No. : 370-375

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सामाजिक माध्यम और इंटरनेट पर रचनात्मकता : नए माध्यम एवं नई भाषा (बाल साहित्य के संदर्भ में)

गुरु गोविंद विश्वत, शोधार्थी

अनुराधा पाकलपाटि, शोध निर्देशिका

सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग, वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज (विस्टस)

सार :

वर्तमान युग सूचना–प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया का युग है, जिसने साहित्य की भाषा, शैली और अभिव्यक्ति को नए रूप में प्रस्तुत किया है। फेसबुक और इंटरनेट जैसे डिजिटल मंचों ने बाल साहित्य को पारंपरिक पुस्तकों और पत्रिकाओं से आगे बढ़ाकर त्वरित, बहुआयामी और सहभागी मंच उपलब्ध कराया है। बच्चों की रचनात्मकता अब केवल लिखित शब्दों तक सीमित न रहकर ऑडियो, वीडियो, चित्र और इमोजी जैसी मल्टीमॉडल विधाओं में प्रकट हो रही है।

इन माध्यमों से बच्चों को अभिव्यक्ति के नए अवसर मिले हैं, किंतु इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी हैं। भाषाई शुद्धता का संकट, अशुद्ध या निम्नस्तरीय सामग्री की उपलब्धता, इंटरनेट की लत, आलोचनात्मक सोच का ह्रास और पारंपरिक साहित्य से दूरी। इसके बावजूद यदि गुणवत्ता नियंत्रण, स्क्रीन–समय संतुलन और डिजिटल साक्षरता पर ध्यान दिया जाए, तो ये मंच हिंदी बाल साहित्य को और समृद्ध कर सकते हैं।

फेसबुक और इंटरनेट ने बच्चों को केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि सृजनकर्ता बनने का अवसर दिया है। नई भाषा, नए माध्यम और रचनात्मक प्रयोग हिंदी बाल साहित्य को आधुनिक समय के अनुरूप अधिक जीवंत और प्रासंगिक बना रहे हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि यदि इनका सही दिशा में उपयोग हो, तो हिंदी बाल साहित्य का भविष्य निश्चय ही उज्ज्वल है।

मूल शब्द : फेसबुक, इंटरनेट, रचनात्मकता, नई भाषा, बाल साहित्य, सोशल मीडिया, डिजिटल माध्यम।

प्रस्तावना :

वर्तमान युग सूचना–प्रौद्योगिकी और इंटरनेट का युग है। आज मानव जीवन का हर पहलू सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब आदि से प्रभावित है। विशेषकर फेस्बूक ने केवल संवाद का माध्यम भर नहीं बनाया, बल्कि विचारों, अनुभवों और रचनात्मकता को साझा करने का एक सशक्त मंच भी प्रदान किया है। इंटरनेट के इन नए माध्यमों ने साहित्य की अभिव्यक्ति की भाषा, शैली और स्वरूप में भी परिवर्तन किया है। बाल साहित्य, जो परंपरागत रूप से पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकों और मौखिक परंपरा के माध्यम से बच्चों तक पहुँचता था, अब डिजिटल प्लेटफॉर्म पर नए रूप में उभर रहा है। फेसबुक और अन्य इंटरनेट मंचों पर बाल साहित्यकार

अपनी रचनाओं को साझा कर बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों तक तुरंत पहुँचा सकते हैं। इस प्रक्रिया में भाषा अधिक संवादपरक, सरल और चित्रात्मक होती जा रही है, जिससे बाल साहित्य की पहुँच और प्रभाव दोनों ही व्यापक हुए हैं।

इंटरनेट और सोशल मीडिया ने बाल साहित्य को केवल पाठक–कलेवर से आगे बढ़ाकर रचनात्मक सहभागिता का मंच बना दिया है। हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि सोशल मीडिया बच्चों की लिखित भाषा और विषय चयन दोनों को प्रभावित कर रहा है – छोटे लेखन में सोशल–मीडिया प्रवृत्तियाँ, कोड–स्विचिंग और नए विषय दिखाई दे रहे हैं।[1]

संशोधित भूमिका का अंश :

संचार माध्यम विशेषज्ञ मार्शल मैकलुहान का कथन है – The medium is the message अर्थात् माध्यम स्वयं संदेश को आकार देता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो फेसबुक और इंटरनेट जैसे माध्यमों ने न केवल साहित्य की प्रस्तुति बदली है, बल्कि उसकी भाषा और अभिव्यक्ति को भी नया स्वरूप प्रदान किया है। इसी संदर्भ में यह लेख फेसबुक और इंटरनेट पर रचनात्मकता के विभिन्न आयामों की चर्चा करेगा तथा बाल साहित्य में नए माध्यमों और नई भाषा की प्रासंगिकता को रेखांकित करेगा।

इंटरनेट और फेसबुक : नया माध्यम :

इंटरनेट ने बच्चों के सामने ज्ञान और सूचना का असीम सागर खोल दिया है। पहले बच्चों तक साहित्य मुख्यतः बाल पत्रिकाओं (जैसे चंपक, नंदन, बालहंस, पराग आदि) या विद्यालयी पुस्तकों के माध्यम से पहुँचता था। आज वही साहित्य डिजिटल रूप में वेबसाइट्स, ई–बुक्स और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध है। फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म बच्चों के लिए प्रत्यक्ष नहीं बनाए गए थे, परंतु बच्चों से संबंधित साहित्य, कहानियाँ, कविताएँ, चित्रकथाएँ और गतिविधियाँ यहाँ लेखकों, शिक्षकों और अभिभावकों के माध्यम से साझा की जाती हैं। अब कई लेखक और साहित्यकार अपनी कहानियाँ और कविताएँ फेसबुक समूहों और पेजों के माध्यम से बच्चों तक पहुँचा रहे हैं। बाल साहित्य के लिए समर्पित कई फेसबुक ग्रुप्स हैं, जहाँ बच्चों की कहानियाँ, कविताएँ, पहेलियाँ और चित्रकथाएँ डाली जाती हैं। इन समूहों में शिक्षक और अभिभावक बच्चों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार फेसबुक न केवल वयस्कों का माध्यम है, बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों के साहित्य को भी एक बड़ा मंच प्रदान कर रहा है। इसी तरह, यूट्यूब चौनल्स, ब्लॉग्स और इंस्टाग्राम पेज भी बच्चों के लिए रचनात्मक सामग्री प्रस्तुत कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, बाल कविताएँ वीडियो रूप में लोकप्रिय हो रही हैं, जिन्हें बच्चे सुनते और गुनगुनाते हैं। ऑडियो स्टोरीज बच्चों को सुनने और कल्पना करने के लिए प्रेरित करती हैं। इस तरह इंटरनेट और सोशल मीडिया, पारंपरिक साहित्य को नए रूप में ढालकर बच्चों तक पहुँचा रहे हैं।

फेसबुक पर विशेष समूह, पेज और लाइव–बैठकें बाल–लेखकों, शिक्षकों और बच्चों को जोड़ती हैं। ये प्लेटफॉर्म पाठकों–लेखकों के बीच सीधा संवाद, प्रतियोगिताएँ, ऑनलाइन पाठ–कार्यशालाएँ और डिजिटल पुस्तक–प्रदर्शन संभव करते हैं – जिससे पारंपरिक प्रकाशन चक्र छोटा होता है और पढ़ी जाने वाली सामग्री की पहुँच बढ़ती है। उदाहरण के लिए स्थानीय–स्तरीय बाल साहित्य महोत्सव और फेसबुक–लाइव से जुड़ी गतिविधियाँ अब नियमित रूप से हो रही हैं।[2]

रचनात्मकता और नई भाषा की संभावनाएँ :

रचनात्मकता का अर्थ केवल कविता या कहानी लिखना नहीं है, बल्कि भाषा के साथ खेलने की क्षमता, नए विचार उत्पन्न करना और उन्हें अभिव्यक्त करना है। इंटरनेट और फेसबुक ने बच्चों में इस रचनात्मकता को जगाने के लिए अनगिनत साधन दिए हैं। आज बच्चे ऑनलाइन कहानी प्रतियोगिताओं में भाग ले रहे हैं। फेसबुक या गूगल मीट पर कहानी सुनाने की प्रतियोगिताएँ हो रही हैं। बच्चे वीडियो बनाकर अपनी कविताएँ और नाटक प्रस्तुत कर रहे हैं। यह सब डिजिटल रचनात्मकता का हिस्सा है। परंतु इसके साथ एक नई भाषा भी सामने आई है। उदाहरण के लिए : हिंग्लिश : बच्चे 'Good Morning दोस्तों' जैसे वाक्य प्रयोग करते हैं।

इमोजी भाषा : कई बार शब्दों की जगह Imozi जैसे इमोजी प्रयोग होते हैं।

संक्षिप्त रूप (Short forms) : 'न' (you), 'हत8' (Great), 'इजू' (by the way) आदि।

नेट संस्कृति के शब्द : जैसे 'लाइक', 'शेयर', 'फॉलो', 'कमेंट'।

यह नई भाषा बच्चों के लिए आकर्षक है, क्योंकि यह तेज, रोचक और आधुनिक प्रतीत होती है। परंतु यह शुद्ध हिंदी के लिए चुनौती है। फिर भी यदि इस नई भाषा का सही उपयोग हो, तो यह बच्चों की कल्पनाशक्ति और रचनात्मक अभिव्यक्ति को और समृद्ध कर सकती है। उदाहरण के लिए, बच्चे इमोजी का उपयोग करके छोटी–छोटी कहानियाँ बना सकते हैं।

बालकों की रचनात्मक भागीदारी - कैसे बदल रही है गतिविधि :

इंटरनेट बच्चों को केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि निर्माता भी बना देता है। बच्चे खुद कविताएँ पोस्ट करते हैं, छोटी कहानियाँ अपलोड करते हैं, चित्र/कॉमिक्स बनाकर साझा करते हैं और वीडियो–कहानी बनाते हैं। इस सहभागिता से रचनात्मकता का अभ्यास बढ़ता है –वे फीडबैक पाते हैं, सहपाठी–समर्थन मिलता है और छोटे–छोटे प्रयोग आजमाते हैं (जैसे हाइब्रिड शैलियाँ, मल्टीमॉडल टेक्स्ट)। शोध बताते हैं कि डिजिटल/सोशल प्लेटफॉर्म पर हुई भागीदारी बच्चों की लेखन शैली और शब्द चयन में परिवर्तन लाती है।[3]

चुनौतियाँ :

हालाँकि इंटरनेट और फेसबुक ने नए अवसर दिए हैं, लेकिन इसके साथ कई चुनौतियाँ भी हैं।

भाषाई शुद्धता का संकट :

बच्चे बहुत जल्दी हिंग्लिश (हिन्दी – अंग्रेजी मिश्रण), ट्रांसलिटरेशन (रोमन में हिंदी लिखना) और चैट – शॉर्टकट्स के आदतन प्रयोग के आदी हो जाते हैं। ऐसे में औपचारिक और शुद्ध हिंदी लिखने – बोलने की प्रवृत्ति कमजोर होती है।

कारण :

मोबाइल–किवर्ड, त्वरित मैसेजिंग की प्रवृत्ति, ऑनलाइन मित्रों में अंग्रेजी शब्दों का सामान्य प्रयोग, और शिक्षक/परिवार द्वारा स्पष्ट अलगाव न बनाना। सोशल प्लेटफॉर्म पर अनौपचारिक भाषा की स्वीकार्यता भी इसका कारण है।

प्रभाव :

वाक्य–रचना, व्याकरण और शब्द–सभीता (Vocabulary) पर असर, औपचारिक लेखन व परिक्षाओं में गलतियाँ, साहित्यिक अभिव्यक्ति की गहराई में कमी।

गुणवत्ता का अभाव :

इंटरनेट पर हर प्रकार की सामग्री उपलब्ध है पर हर सामग्री साहित्यिक या शैक्षिक मानकों पर खरी नहीं उतरती, बच्चे अशुद्ध, भ्रामक या निम्नस्तरीय लेखन तक पहुँच लेते हैं। डिजिटल सामग्री में गुणवत्ता का भेद कठिन हो सकता है। बच्चों के लिए उपयुक्त, नैतिक और संवेदनशील सामग्री की मॉडरेशन जरुरी है।

कारण :

बिना संपादन व मॉडरेशन के मुफ्त सामग्री का बाढ़–सा आना, एल्गोरिद्म जो केवल व्यूज/एंगेजमेंट को बढ़ाते हैं, माता–पिता/शिक्षक द्वारा सामग्री–निर्देशन का अभाव।

प्रभाव :

बच्चों का साहित्य का मानक गिर सकता है। गलत भाषा–उपयोग फैल सकता है। गलत जानकारी का अनुकरण।

लत का खतरा (स्क्रीन टाइम/ध्यान विकर्षण) :

फेसबुक, गेम्स और मनोरंजनात्मक कंटेंट बच्चों को लंबे समय तक व्यस्त रख सकते हैं। साहित्यिक ध्‍ शैक्षिक पढ़ाई की जगह मनोरंजन ले लेता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और स्वास्थ्य संस्थाएँ स्क्रीन–टाइम पर सतर्क रहने की सलाह देती हैं – छोटे बच्चों के लिए सीमाएँ और सक्रिय, संवादात्मक पढ़ाई को प्राथमिकता देना जरूरी है।[4]

कारण :

अल्गोरिथ्मिक डिजाइन, गेम–लूप, तात्कालिक पुरस्कार (लाइक्स, कमेंट्स), और मॉनिटरिंग का अभाव।

प्रभाव :

पढ़ने–लिखने के लिए समय की कमी, ध्यान और गहन पठन–क्षमता (Deep Reading) का क्षरण, नींद पर बुरा प्रभाव।

आलोचनात्मक सोच का ह्रास :

बच्चे तुरंत गूगल/इंटरनेट से उत्तर ढूँढ लेते हैं पर इसका मतलब यह भी है कि वे खोजी, तुलना–आधारित और स्वयं–अभिव्यक्तिक (Original) सोच का अभ्यास कम करते हैं।

कारण :

सहज उपलब्धता (Quick Answers), असाइनमेंट/होमवर्क में रटने या कॉपी–पेस्ट की प्रवृत्ति, और शिक्षण–पद्धति का प्रक्रिया पर कम ध्यान।

प्रभाव :

मौलिकता में कमी, विचार–विस्तार की क्षमता घटना, समस्या–समाधान कुशलता में कमी।

पारंपरिक साहित्य से दूरी :

आकर्षक डिजिटल कंटेंट के कारण बच्चे किताबों, पत्रिकाओं और लंबी कथाओं से कम जुड़ते हैं, पारंपरिक पठन–आनंद घटता है।

कारण :

त्वरित, दृश्यमान और इंटरैक्टिव कंटेंट का लोभ, स्कूल पाठ्यक्रम में पाठन–समय का कम होना,

पारिवारिक पठन–संस्कृति का अभाव।

प्रभाव :

गहरी पाठन–क्षमता, कल्पना की गंभीरता, कथात्मक समझ और साहित्यिक अनुशासन का घटना।

आज हम एक ऐसे समय में जी रहे हैं जहाँ भाषा और साहित्य का स्वरूप निरंतर बदल रहा है। फेसबुक और इंटरनेट जैसे माध्यमों ने हिंदी बाल साहित्य को नई दिशा दी है। बच्चों तक साहित्य अब केवल पुस्तकों के माध्यम से नहीं, बल्कि वीडियो, ऑडियो, इमोजी और डिजिटल कहानियों के रूप में पहुँच रहा है। निस्संदेह, इससे बच्चों की रचनात्मकता के नए आयाम खुल रहे हैं। लेकिन साथ ही भाषा की शुद्धता और साहित्य की गुणवत्ता बनाए रखना हमारी जिम्मेदारी है। हमें बच्चों को यह सिखाना होगा कि इंटरनेट केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सीखने और रचनात्मक बनने का अवसर भी है। हिंदी दिवस के अवसर पर यह कहना उचित होगा कि यदि हम इंटरनेट और सोशल मीडिया की शक्ति को सही दिशा में प्रयोग करें, तो हिंदी बाल साहित्य का भविष्य उज्ज्वल है। नई भाषा और नए माध्यम बच्चों के लिए हिंदी को और भी रोचक, जीवंत और आधुनिक बना सकते हैं।

भाषा में आए बदलाव – नया लहजा, शैलियाँ और उपकरण :

इंटरनेट–युग की भाषा के कुछ नामी–दर्जे के लक्षण हैं संक्षेप (Abbrev.), इमोजी का समावेश, कोड–स्विचिंग (हिंदी–अंग्रेजी का मिश्रण), प्रतिक्रियात्मक वाक्यांश और संवादात्मक टोन। बच्चों की कहानियों में ये तत्व नयी कथन–शैली बनाते हैं – सरल, त्वरित और मीडिया–अनुकूल। साथ ही, सोशल मीडिया के कारण विषयगत बदलाव भी दिखता है (गेमिंग, डिजिटल मित्रता, एनवायरनमेंटल–थीम्स, आत्म–कथनात्मक लेखन)। सोशल–मीडिया भाषा के व्यापक प्रभावों पर अनुसंधान उपलब्ध है।[5]

मल्टीमॉडल रचनात्मकता – टेक्स्ट से परे :

इंटरनेट पर बाल साहित्य अब केवल शब्द नहीं यह चित्र, ध्वनि, वीडियो और इंटरएक्टिव एलिमेंट्स का मिश्रण है। एनिमेटेड कहानियाँ, ऑडियो–स्टोरी, चित्र–कथाएँ और इन्फोग्राफिक आधारित कथन पढ़ने–लिखने के नए कौशल (Multiliteracies) सिखाते हैं। शोध दर्शाते हैं कि विजुअल और ऑडियो–नरेटिव का प्रयोग भाषा–विकास और समझ–वृद्धि में सहायक है।[6]

अवसर :

- **पहुँच और समावेशन :** डिजिटल प्लेटफॉर्म दूरदराज के बच्चों को भी साहित्य के साथ जोड़ते हैं। डिजिटल लर्निंग समानता और पहुँच बढ़ा सकती है।[7]
- **रचनात्मक अभ्यास :** बचपन से लिखने–बोलने का मंच मिलने से अभ्यास की मात्रा बढ़ती है, फीडबैक तेज मिलता है।[8]
- **नए स्वर और प्रयोग :** बच्चे नये फॉर्म (माइक्रो–कविता, सोशल–कॉमिक, वीडियो–कहानी) आजमा रहे हैं, जिससे साहित्यिक प्रयोगों का रंग बढ़ रहा है।[9]

निष्कर्ष :

फेसबुक और इंटरनेट बाल साहित्य के लिए समृद्ध अवसर और नए भाषाई आयाम लेकर आए हैं। ये माध्यम बच्चों को निर्माता बनाने में सहायक हैं, परन्तु गुणवत्ता–नियंत्रण, स्क्रीन–समय संतुलन और ऑनलाइन

सुरक्षा को प्राथमिकता देना अनिवार्य है। शिक्षकों, माता–पिता और प्रकाशकों के संयुक्त प्रयास से डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सुरक्षित, रचनात्मक और शैक्षिक रूप से समृद्ध बाल साहित्य का निर्माण सम्भव है।[10]

संदर्भ (प्रमुख स्रोत) :

1. Social media drives language change in children's writing — Oxford University Press, 7 March 2025. (Oxford University Press)
2. The effect of storytelling on the development of language and social … — NCBI / PMC article. (PMC)
3. UNESCO — Digital learning and equity / Stories of Change for Children. (UNESCO)
4. WHO — To grow up healthy, children need to sit less and play more (screen time guidance). (World Health Organization)
5. American Academy of Pediatrics — Screen time / media use guidance. (American Academy of Pediatrics)
6. UNICEF — Keeping children safe online / Online privacy checklist for parents. (UNICEF)
7. उदाहरण : फेसबुक ग्रुप "बाल–साहित्य" और चंडीगढ़ बाल साहित्य महोत्सव के ऑनलाइन पोस्ट / पेज। (Facebook)
8. OECD — Digital equity and inclusion in education (डिजिटल विभाजन पर नीतिगत दृष्टि). (ONE MP)